यहाँ के और जो भी सत्संग होते है उनमें तो सब गये होंगे। यों तो कहेंगे वील इज वाहेगुरू यों
का नाम बतलाते। यहाँ बाप को बच्चों को कुछ कहने की दरकार नहीं रहती है। एक ही बार कह दिया
बार-2 कहने की जरूरत नहीं है। बाप भी एक ही है उनका कहना भी एक ही है। क्या कहते है?
मामेकम् याद करो। एक बार सुना। बस। नया तो कोई यहाँ आ नहीं सकते। पहले सीख कर फिर
यहाँ बैठते है। हम जब बाप के बच्चे है तो उनको याद करना है। यह भी तुमने अभी जाना है
समझा कि हम सभी आत्माओं का बाप एक ही है। दुनिया तो नहीं जानती। तुम जानते हो हम
उस बाप के बच्चे है। उनको सभी गाड फादर भी कहते है। अब फादर कहते है मै इस साधारन तन
तुमको पढ़ाने आता हूँ। अभी तुम जानते हो बाबा इनमे आये है। हम उनके बने है। बाबा ही आकर
पतित से पावन होने का रास्ता बताते है। यह सारा दिन बुधी मे रहता है। यों शिव बाबा की सन्तान
सब है। परन्तु तुम जानते हो और जानते नहीं है। तुम बच्चे उठते बैठते जानते हो हम आत्मा है।
हमको बाप ने फरमान किया है कि हमको याद करो। मै तुम्हारा बेहद का बाप हूँ। सब चिल्लाते रहते
कि हे पतित पावन आओ। हम पतित बने है। यह देह नहीं कहती। आत्मा इस शरीर दवारा कहती
84 जन्म भी आत्मा लेती है ना? शरीर तो पार्ट बजा कर चला जाता है। हम आत्मा एक शरीर छोड़ कर
दूसरा लेती हूँ। अभी हमने यह अन्तिम 84वाँ जन्म लिया है। अभी बाप ने आत्मा को याद दिलाया है कि
तुमने 84 जन्म लिये है। पार्ट बजाया है ना। यह बुधी मे रखना है कि हम एक्टर्स है। बाबा ने अब हमको
त्रिकाल दर्शी बनाया है। आद मध्य अन्त का ज्ञान दिया है। बाप को ही सब बुलाते है ना। अभी
वो कलियुगी कहते रहते है कि भगवान आओ और तुम संगम युगी ब्राह्मण कहते हो कि बाबा आया हुआ
है इस संगम युग को तुम्ही जानते हो। यह पुरुषोतम युग गाया जाता है। पुरुषोतम युग होता है
कलियुग के अन्त और सतयुग की आद के बीच मे। सतयुग मे सत्य पुरुष, कलियुग मे झूठे पुरुष रहते है।
सतयुग है ही सच खण्ड। सतयुग मे जो हो कर गये है उनके यहाँ चित्र है। सबसे पुराने ते पुराना यह
चित्र है। इनसे पुराना चित्र कोई होता नहीं। जो होकर गये है उनके चित्र है। ऐसे तो बहुत मनुष्य
झूठे चित्र भी बैठ बनाते है। जैसे हनुमान गनेश आद कोई होकर थोड़ेही गये है। यह सब भक्ति मार्ग
के मनघड़न्त चित्र बैठ बनाये है। यह तुम जानते हो कौन-2 होकर गये है। जैसे नीचे अम्बा का
चित्र बनाया है। अथवा काली का चित्र है। तो ऐसी भुजाओं वाली थोड़ेही हो सकती है। अम्बा को भी
सजीव होगी ना। मनुष्य तो जाकर हाथ जोड़ते है पूजा करते है। भक्ति मार्ग मे अनेक प्रकार के चित्र
बनाये है। अकासुर बकासुर की भयंकर शक्ल दिखाते है। ऐसे कोई मनुष्य है थोड़ेही। पुलिस के सिपाही
लड़ाई आद मे ड्रेस ऐसी पहनते है जो भयंकर रूप बन जाता है। है तो मनुष्य ही ना। मनुष्य के
ऊपर ही भिन्न-भिन्न प्रकार के सजावटें करते है। तो रूप बदली हो जाता है। तो यह चित्र आद वास्तव
कोई है नहीं। यह सब है भक्ति मार्ग। मनुष्य तो मनुष्य ही है। जनावर-जनावर की ही सन्तान होते
है। यहाँ मनुष्य कोई कैसे लूले लंगड़े निकल पड़ते है। सतयुग मे ऐसे नहीं होता। सतयुग को तो
जानते हो आदी सनातन देवी देवता धर्म था। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी थे। वहाँ ड्रेस देखो हर एक की
न्यारी-2 कैसे है? वहाँ तो यथा राजा रानी तथा प्रजा होते है। जितना नजदीक होते जावेंगे तो तु
अपनी राजधानी, राजधानी की ड्रेस आद का भी सा० होता रहेगा देखते रहोगे हम ऐसे-2 कुल मे प
यह करते है। देखेंगे भी वो जिनका बुधी योग अच्छा होगा। अपने शान्ति धाम और सुख धाम
याद करते है। धन्धा धोरी तो करना ही है। भक्ति मे भी धन्धा धोरी को तो करते है ना। इफिर
भगवान की याद करते रहते है। जैसे मीरा है कितना याद करती थी। कृष्ण की पुजारिन थी। ध्यान
में जाती थी। ज्ञान कुछ भी नहीं था। यह सब है भक्ति। उसको कहेंगे भक्ति का ज्ञान। वो ज्ञान

नही सक्ते कि तुम विश्व का मालिक बनोगे। तुम जानते हो यह पढ़ाई है नई दुनिया अमर लोक के लिये। बाकी कोई अमर नाथ पर शंकर ने पार्वती को कथा नही सुनाई है। वो तो शिव शंकर को मिला दिया है। आजकल तो मनुष्य अपने पर भी नाम रखवा लेते है। शिव शंकर राधा कृष्ण। अब बाप सब बातें तुम बच्चों को समझा रहे है। यह भी सुनते है। बाप बिगर दुनिया की आदि मध्य अन्त का राज कोई बता नही सक्ते है। यह कोई साधु सन्त आदि नही है। जैसे तुम गृहस्थ व्यवहार में रहते है वैसे ही यह भी था। हूँ स आदि सब की ही है। जैसे घर में जानवर होते आदि होते है। कुछ फर्क कुछ नही। बापदादा रथ पर सवार होकर आते है बच्चों के पास। यह भगवान की रथ गाया जाता है। कब कैसे पारलौकिक मिलते है। मनुष्यों ने उल्टा समझ लिया है। पतित भी कब देवता हो सकता है क्या। कृष्ण तो है ही शरीर धारी। वो कोई बैल पर बैठेगी। कितना रीला है। भक्ति मार्ग में। मनुष्य बहुत मुंझे हुये है। कुछ नही समझते परन्तु अहंकार कितना है। कितनी टाईटल्स मिले हुये है। बाप को ही नही जाना तो कोई काम के नही रहे। उनको भक्ति मार्ग का ही नशा है। तुमको है ज्ञान मार्ग का नशा। बाबा हमको पढ़ा रहे है। इस संगम पर। तुम भी तो इसी दुनिया में। परन्तु बुद्धि से जानते हो कि हम ब्राह्मण संगम युग पर है बाकी सब मनुष्य कलियुग में है। यह अनुभव की बातें है। बुद्धि कहती है हम कलियुग से अब निकल आये है। बाबा आया हुआ है। यह पुरानी दुनिया ही बदलने वाली है। यह तुम्हारी बुद्धि में है। और कोई नही जानते। भल एक ही घर में रहने वाले है एक ही भारत में है। इसमें भी बाप कहते हमसंगम युग पर है। बाकी कहते नही हम कलियुग में है। बरोबर है ना। यह संगम युग बहुत छोटा है। इनको 60-70 वर्ष मिले हुये है जब तक कि विनाश हो। बच्चे जानते है कि हमारी पढ़ाई पूरी होगी तो विनाश ~~होगा~~ विनाश होना तो जरूर है। तुम्हारे में भी कोई थोड़े ही जानते है। अगर जानते है कि विनाश होने वाला है तो अपनी तैयारी में लग जावे। बैग बैगेज तैयार कर लेवें। बाकी थोड़ा समय है। के तो बन जावे। दूर रहेंगे तो भी पहले बाबा फिर बच्चे। यह तो शिव बाबा का भण्डारा है। तुम शिव बाबा के भण्डारे से खाते हो। ब्राह्मण भोजन बनाते है। इसलिये ही ब्रह्मा भोजन कहा जाता है। जो पवित्र ब्राह्मण है याद में रह कर बनाते है। सिवाय ब्राह्मणों के शिव बाबा की याद में कोई रह नही सक्ते बाकी ब्राह्मण कोई शिव बाबा के याद में रहते है। शिव बाबा का भण्डारा यह है। जहाँ ब्राह्मण भोजन बनाते है। ब्राह्मण योग में रहते है। पवित्र तो है ही। बाकी है योग की बात। इसमें ही मेहनत लगती है। गपोड़ा चल नही सकता। ऐसे कोई कह नही सक्ते कि मैं सम्पूर्ण योग में हूँ। वा 50% योग में हूँ। कोई भी कह नही सक्ते। ज्ञान भी चाहिये। योगी किसीको भी देखेगा तो अपनी ताकत से ही एकदम कोई को भी शान्त कर देगा। सन्नाटा हो जावेगा। जैसे तुम यहाँ याद में बैठते हो। यहाँ खास प्रैक्टिस कराई जाती है। फिर भी कोई सब याद में रहते नही है। कहाँ-2 बुद्धि भागती रहती है। तो वो फिर नुकसान कर लेते है। यहाँ दिखाना चाहिये जो समझे कि मैं फुल टीचर हूँ। बाप की याद में बैठ है। बुद्धि का योग और कोई तरफ नही जावे। सन्नाटा हो जावेगा। तुम अशरीरी बन जाते हो फिर बाप की याद में रहते हो। यह है सच्ची याद। ~~सन्यासी भी शान्ति में बैठते है।~~ वो किसकी रहते है? वो कोई रीयल याद नही कोई भी फायदा नही दे सक्ते है। वो झूठी शान्ति दे सक्ते। बाप को जानते ही नही है। ब्रह्म को ही भगवान समझते रहते है। वो तो है तत्व ही। तुमको श्रीमत मिलती है कि मामेकम् याद करो। तुम जानते हो हम 84 जन्म पापात्मा बनते आये है। धीरे-2 कला कम होती जाती है। जैसे चन्द्रमा की कला कम होती जाती है। देखने से इतना मालूम पड़ता है। अभी कोई भी सम्पूर्ण नही बना है। न कोई जल्दी बन सक्ते है। टाईम पड़ा है। तुमको सब साक्षात्कार होगा। आत्मा कितनी छोटी है उनका भी साक्षात्कार हो सकता है। नही तो

वहिरियाँ ऐसे बताते कि इनमें लाईट क्या है। इनमें ज्योति है कितनी छोटी आत्मा है। यह भी क्या सा करती है। फिर बुद्धि से ही आत्मा को देखते हैं। यह भी सब ड्रामा में नूंध है। मेरे हाथ में कुछ नहीं है। ड्रामा बूट ही करती है। यह सभी ड्रामा अनुसार चलता रहता है। भागना आदि सभी ड्रामा में नूंध थी। [illegible] ऐसे रहती है। अभी बाप शिक्षा देते हैं कि पावन कैसे बनना है। बाप को याद करना है। कितनी छोटी आत्मा है। जो पतित बन फिर पावन बनती है। वण्डरफुल बात है ना। तुम्हारा कहते हैं ना। बाप से तुम सब कुदरती बातें सुनते हो। सबसे कुदरती बात है आत्मा और परमात्मा की। हम इतनी छोटी आत्मा है। उसमें ही इतना सारा पार्ट नूंधा हुआ है। आत्मा तो अविनाशी है ना। दुनिया में यह बातें कोई भी नहीं जानते जो बाप समझाते हैं। ऋषि-मुनी आदि कोई भी नहीं जानते। पत्थर बुद्धि है ना। इतनी छोटी आत्मा ही पत्थर बुद्धि से फिर पारस बुद्धि बनती है। पत्थर बुद्धि से फिर पारस बुद्धि पारा नाथ कौन बनाते हैं। यह अभी तुम समझते हो। हम आत्मा पारस बुद्धि थी। अभी हमारी पत्थर बुद्धि हो गई है। कितनी छोटी आत्मा है। इन बातों का बुद्धि में स्मरण करना चाहिए। आत्मा कैसे 84 जन्मों का चक्र लगाती है। कितनी आत्मायें हैं? वो होती है जब के [illegible] वो होती है पैदा है। इन बातों को और कोई भी समझ नहीं सकते हैं। तुम बच्चे ही समझ रहे हो। बुद्धि में यही चिन्तन चलता रहता है हम आत्मा पत्थर बुद्धि से फिर अभी पारस बुद्धि बन रहे हैं। यह भूलना नहीं चाहिए। आत्मा की [illegible] है। मनुष्य थोड़ेही जानते हैं आत्मा क्या है परमात्मा क्या है। कितनी महीन बातें हैं समझाने में भी मेहनत लगती है। तो बाप को भी समझना है। तुम आत्मा बाप को याद करते हो ना। तुम जो आत्मा है तो तुम्हारा बाप कौन है? शरीर का बाप तो होगा कोई [illegible] ऐसा है। कोई कह दे नहीं समझाते हैं। अभी तुम बच्चों को यह बात भी समझाई है। आत्मा [illegible] है और 84 का चक्र लगाती है। आत्मा विनाश नहीं होती है। बाप कहते हैं मैं कल्प-2 आकर तुमको यह ज्ञान देता हूँ फिर तुम भूल जाते हो। फिर आकर तुमको यह गुह्य-2 पुआइन्ट्स सुनाता हूँ। यह कोई शास्त्रों में नहीं लिखी हुई है। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है मैं आत्मा बिन्दी हूँ। बाप भी बिन्दी है। लौकिक रीति से तो बाप भी बड़ा, टीचर गुरू भी बड़े मिलते हैं। यह तो एक ही है जो बाप भी है तो टीचर भी है तो गुरू भी है। सारा कल्प देह धारी को याद किया है। अब बाप कहते हैं मामेकम याद करो। तुम्हारी बुद्धि को कितना महीन बनाता हूँ। विश्व का मालिक बनना कोई कम बात थोड़ेही है। यह भी कोई ख्याल नहीं करते कि यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक कैसे बने? यही विश्व के मालिक थे। और कोई नहीं था। मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते तुम भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो। न [illegible] कोई इन बातों को समझ नहीं सकता। पहले-2 मोटे रूप में समझा कर फिर महीनता से समझाया जाता है। बाप है बिन्दी। वो फिर इतना बड़ा लिंग रूप रख देते हैं। मनुष्यों के भी बहुत बड़े-2 चित्र बनाते हैं। परन्तु ऐसा है नहीं। भक्ति मार्ग में क्या-2 बैठ बनाते हैं। मनुष्य कितना मूँझे हुये हैं। [illegible] बने हुए जो पास्ट हो गया वो ही फिर होगा। अभी तुम बाप की श्रीमत पर चलो। इनमें भी बाप [illegible] देकर खरीदा है। तुमको हम बादशाही देता हूँ। अब इस सर्विस में लग जाना है। अपना [illegible] ने पुरुषार्थ करो। यह सब छोड़ दो। तो यह भी निकला [illegible]। सभी तो ऐसा निकल नहीं सकते नहीं है। [illegible] बच्चे तो आकर बैठ गये। हमको तो राजाई मिलती है फिर पाई पैसे की क्या [illegible]। अभी तो [illegible] बच्चों से पुरुषार्थ कराते हैं। जानते हो राजधानी स्थापन हो रही है। कहते भी हैं कितनी बड़ी प्रारब्ध [illegible] ही बनेंगे। तो श्रीमत पर चल कर दिखाओ। कुछ भी चिन्ता मत करो। बाबा ने भी ऐसा पुरुषार्थ कर श्रीमत [illegible] का क्या होगा। ~~एक्सीडेन्ट में अचानक कोई मर जाता तो कोई बच जाता~~ [illegible] हार्टफेल। वो तो सदैव [illegible] जाते हैं। बाप कहते हैं मैं तेरे रखवाले हैं। तो डरना नहीं चाहिए। अच्छा बच्चों से विदाई। ओम